(Approved Research Topic)

"मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में प्रतिरोध की चेतना : एक अध्ययन"

"Mannu Bhandari Ke Katha Sahitya Mein Pratirodh Ki Chetna : Ek Adhyayan"

(SHORT SYNOPSIS)

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की हिन्दी विषय में पी–एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तावित

शोध–प्रारूप

Synopsis/Research Proposal to U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj for Ph.D. in Hindi

Submitted by
प्रस्तुतकर्ती

Name of the Guide–
Prof. Satyapal Tiwari

शोध निर्देशक
प्रोफेसर सत्यपाल तिवारी

Name of Candidate – Rajshree Shukla
शोधार्थिनी का नाम–राजश्री शुक्ला
Enrollment No. – 2301305
शोधार्थिनी की नामांकन संख्या – 2301305
Subject – Hindi Literature
विषय –हिन्दीसाहित्य

मानविकी विद्या शाखा
School of Humanities

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज
U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

School of Humanities

Certificate

I hereby declare that the short synopsis **"मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में प्रतिरोध की चेतना : एक अध्ययन"** being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Hindi under school of Humanities of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2023-24. It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of **Prof./Dr. Satyapal Tiwari** and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

Research Supervisor
Prof. Dr. Satyapal Tiwari

Rajshri

Rajshree Shukla
En. No. 2301305

Prof. Dr. Satyapal Tiwari
(Director of School of Humanities)

26/07/24

Prof. P.K. Pandey
(Secretary of RDC/ Director, R&D Cell)

CONTENTS

S. No.	Description	Page No.
1.	Introduction.	5 - 6
2.	Literature Review.	7
3.	Description Broad Area.	8
4.	Objectives of the Study.	8
5.	Research Methodology.	8
6.	Expected outcome of the Research.	9
References.		9-11
Plagiarism Report		

Rajshri

सार (Abstract)

"मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में प्रतिरोध की चेतना : एक अध्ययन" विषय पर प्रस्तुत शोधकार्य में मन्नू भण्डारी के लेखन में नारी संघर्ष, सामाजिक विसंगतियों और व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाने के रूप में प्रकट होती हैं। उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों में मध्यम वर्गीय जीवन, नारी–पुरूष संबन्धों में द्वन्द और राजनीतिक–सामाजिक व्यवस्था पर तीखी टिप्पणी की है।

Key Words–कथा साहित्य, प्रतिरोध की चेतना, राजनीतिक–सामाजिक व्यवस्था, नारी स्वत्रंता, पारम्परिक स्त्रीत्व, आदर्शवाद, यथार्थवाद, विसगतियाँ, स्त्री स्वत्रंता।

Rajshri

प्रस्तावना–

मन्नू भण्डारी का समूचा साहित्य भारतीय स्त्री की विविध स्थितियों का तो चित्रण करता है साथ ही नारी के हृदय में उत्पन्न प्रतिरोध की चेतना को जागृत करने का प्रयास किया है। नारी की समस्यायें वर्तमान में भी है, जिनसे छुटकारा पाने के लिए वे आज भी संघर्षरत है। जब नारी विभिन्न परिस्थितियों में अपने गरिमा और स्वाभिमान को सुरक्षित रख सकेगी, तभी उसे समाज में अपना वास्तविक स्थान प्राप्त कर सकेगी। नारी में प्रतिरोध की चेतना जागृत करने में मन्नू भण्डारी का उल्लेखनीय योगदान है। इन्होंने हिन्दी कथा साहित्यकारों में अपना अलग विचार एवं विमर्श प्रस्तुत किया है। मन्नू भण्डारी ने अपने समूचे साहित्य को नारी–जीवन की वर्तमान समस्याओं के साथ जोड़ा है। सातवें–आठवें दशक में मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य ने समूचे समाज का ध्यान अपनी ओर खींचा। नारी चेतना में वे यौन–स्वच्छंदता की घोर विरोधी हैं। इसके साथ ही मन्नू भण्डारी की नारी आर्थिक रूप से स्वालम्बी है, तत्कालीन समय में मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में स्त्री के इन समस्त स्वरूपों के विषय में भी जानकारी दी गयी है।

आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में मन्नू भण्डारी का स्थान विशिष्ट है। मन्नू भण्डारी बहुत ही सहजता से स्त्री के अन्तः स्थल में जागृत होने वाले

Rajshri

भावों, स्थिति विशेष में पुरुष के हृदय में उत्पन होने वाली शंकाओं, ईर्ष्याओं को अपने कथा साहित्य का विषय बनाया है। इन्होंने रचनाओं के विभिन्न प्रकारों जैसे उपन्यास, कहानी एवं नाटक आदि में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। अपने सम्पूर्ण साहित्य में मन्नू भण्डारी वर्तमान समाज में स्त्री स्वतत्रंता का मुददा अत्यन्त गंभीरता से प्रकट करती है। उन्होंने पुरानी रूढ़ियों, रीति–रिवाजों, खोखली नैतिकता, मान्यता से शोषित स्त्री के मौलिक व्यक्तित्व की खोज की। वह स्त्री को पारम्परिक स्त्रीत्व के बोझ मुक्ति दिलाना चाहती है।

मन्नू भण्डारी अपने समूचे साहित्य में स्त्री के जीवन में पुरुष की उपस्थिति को अनिवार्य मानती है। वे स्त्री को पुरुष की सहगामिनी के रूप में देखती है, अंधानुगामिनी के रूप में नहीं । मन्नू भण्डारी स्त्री को अनेक प्रकार सामायिक सम्बन्धों एवं व्यापक पारिवारिक संदर्भों में अंकित किया है। उनका दृष्टिकोण प्रतिरोध की चेतना से सजग उस भारतीय स्त्री का प्रतिधित्व करता है, जो भारत की स्वच्छ और स्वस्थ परम्पराओं को तो स्वीकृत करती है परन्तु अस्वस्थ एवं मलीन परम्पराओं का खण्डन करती हैं।

मन्नू भन्डारी के समूचे साहित्य में स्त्री प्रतिरोध चेतना के विभिन्न रूप है। **'मैं हार गयी', 'यही सच है', 'त्रिशुंक'** आदि कहानियों में प्रेम त्रिकोण का अंकन है। इसमें प्रेम के प्रति स्थायित्व में नारी का विश्वास नहीं है। इसमें

Rajshri

शरीर सुख का ही अंकन है जो दूसरे व्यक्ति से मिलन पर क्षण भर के लिए ही सही, मन को आनंद देता है। आधुनिक क्षणवाद में लिपटी इनकी कहानियाँ वर्तमान समस्याओं से अछूती नही है।

मन्नू भण्डारी ने अपने उपन्यासों में कहानियों की लक्ष्मण रेखा को तोड़ते हुये नारी चेतना को एक नया अर्थ देती है। वे स्त्री समस्याओं को बहुत ही ऊँचे स्वर में उठाती हैं। शायद इसी कारण से आधुनिक साहित्य में स्त्री चेतना को अत्यन्त गंभीरता के साथ स्थापित करने का श्रेय इन्हें जाता है।

स्त्री को विभिन्न परिस्थितियों एवं वातावरण का अत्यन्त सूक्ष्म विश्लेषण एवं उसे प्रस्तुत करने में वे माहिर हैं। उनके कथा संसार में गोते लगाते हुये स्त्री को तमाम साक्षात्कार का मौका मिलता है। मन्नू भण्डारी का साहित्य संसार स्त्री में प्रतिरोध के चेतना का मंत्र है जो स्त्री को नयी राह दिखाता है। इनके समूचे साहित्य में **'नारी की प्रतिरोध चेतना'** का यथार्थ बहुत हो सहजता एवं बारीकी से झलकता है। मन्नू भण्डारी ने लिखा भले ही कम हो पर अपने उच्च कोटि के लेखन से साहित्यकारों में महत्वपूर्ण स्थान बनाया। मन्नू भण्डारी का कथा साहित्य एवं संसार वास्तव में उच्च नारी चेतना के सम्बन्ध में अत्यन्त ही उच्च कोटि का माना जाता है।

Rajshri

मन्नू भण्डारी का जीवन परिचय--

मन्नू भण्डारी हिन्दी साहित्य जगत की एक महान लेखिका, कहानीकार व उपन्यासकार मानी जाती हैं। मन्नू भण्डारी 1960 के दशक के नयी कहानी आन्दोलन में एक मुख्य महिला लेखिका भी रही हैं।

इनका जन्म 03 अप्रैल 1931 को मंदसौर जिला (म0प्र0) में श्री सुख संपतराय भंडारी व श्रीमती अनूप कुमारी के यहाँ हुआ।

इनकी शुरूआती शिक्षा अजमेर में हुई और बाद में उन्होंने 'कलकत्ता विश्वविद्यालय' से स्नातक व बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से हिन्दी भाषा और साहित्य में परास्नातक की डिग्री हासिल की।

कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्राध्यापिका बनकर कलकत्ता विश्वविद्यालय में इन्होंने अध्यापन को ही अजीविका का मुख्य साधन बना लिया।

इनका विवाह प्रसिद्ध साहित्यकार राजेन्द्र यादव से 22 नवम्बर 1959 को कलकत्ता में हुआ। इसके बाद मन्नू भंडारी कलकत्ता से दिल्ली चली आयीं जहाँ वे अपने रिटायरमेन्ट तक दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध मिरांडा कॉलेज में बतौर प्राध्यापिका कार्यरत रहीं।

Rajshri

मन्नू भण्डारी (वास्तविक नाम महेन्द्र कुमारी) ने जिस नाम से साहित्य जगत में अपने लेखन के माध्यम से प्रसिद्धि हासिल की थी वही नाम उन्होंने अपने जीवन के अन्त तक बनाए रखा व वर्ष 2021 में गुरूग्राम में इनका 90 साल की आयु में निधन हो गया।

साहित्य समीक्षा

विषय– "मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में प्रतिरोध की चेतना : एक अध्ययन"

भूमिका– स्त्री विकास–कम की आजादी के बाद स्थिति पर दृष्टि डालें तो स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् की नारी जागरण की गति आश्चर्य में डाल देने वाली है। मन्नू भण्डारी के विचार दर्शनीय हैं। आज की नारी प्रत्येक क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रहीं हैं। शिक्षा, तकनीकि, चिकित्सा, कला, विज्ञान, साहित्य कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहॉ नारी का प्रवेश न होता हो किन्तु आगे यह कहना भी जरूरी समझते हैं कि पुरूष–प्रधान समाज में आज भी नारी को बराबर का दर्जा देने में सुगबुगाहट है। यही नहीं समाज की रूढ़िवादी, परम्परावादी एवं कम पढ़ी–लिखी नारियों के विचार में कुछ विशेष परिवर्तन आज भी नजर नहीं आता। आधुनिक नारी के रूप में मन्नू भण्डारी के नारी पात्रों में सर्वाधिक आधुनिक हैं।

Rajshri

पूर्ववर्ती साहित्य का अवलोकन–

1. **बाबू गुलाब राय (2013)** के अनुसार "यथार्थ वह है जो प्रति हमारे सामने घटित होता। इसमें पाप व पुण्य, दुःख एवं सुख का मिश्रित रूप रहता है। यह सामान्य भाव भूमि के समतल पर रहकर ही वर्तमान की वास्तविकता से बँधा रहता है। स्वर्ग के सुन्दर सपने, परी देश की वस्तुएँ उसकी सीमा से बाहर है। वह संसार की कलंकित–कलिमा पर आवरण की भव्यता नहीं डालना चाहता। वह स्वर्ग को भी भक्ति को कणों से मिश्रित देखना चाहता है।"

2. **सुधा अरोड़ा (2014)–** मन्नू भण्डारी की कहानियों की विशेषता बताते हुए लिखती हैं कि– "हिन्दी कथा–साहित्य की शीर्षस्थ लेखिकाओं में मन्नू भण्डारी एक जाना–माना, प्रतिष्ठित नाम है और उनकी कहानियॉ इस भूमिका को बखूबी निभाती हैं। मन्नू जी का लेखन पाठकों के साथ बड़ी सहजता से तादात्मय स्थापित कर लेता है इसका एक सीधा कारण जीवन में उनके अलेखक होना है– एक निहायक सीधा–सादा, आडम्बरहीन, ईमानदार और बेहद पारदर्शी व्यक्तित्व, जिसका 50 साल पुरानी कहानियॉ, आज भी उसी तरह उद्वेलित करती हैं, जैसे तब करती थी, जब कथा–लेखन में महिला रचनाकार उँगलियों पर गिनी जा

सकती थी। दूसरा कारण उनका अपने समाज के दायरे से ऐसे पात्रों और मुददों को उठाना है जो सहज ही एक बड़े वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। और ऐसे कथानक को बेधड़क, सहज सप्रेषित होने वाली सादी, लेकिन चुस्त और पैनी भाषा में– जिसमें न ज्यादा घुमाव हैं, न पेंच– अपने पाठकों तक पहुँचा देना कि कहानी के निहितार्थ तक पहुँचने में पाठकों को किन्ही आड़े–तिरछे रास्ते से होकर न गुजरना पड़े।''

3. **जयशंकर प्रसाद (2014)** के विचार से, ''यथार्थवाद जीवन की अभिव्यक्ति और आदर्शवाद आभावों की पूर्ति है।''

4. **डॉ0 नन्द दुलारे बाजपेयी (2014)** का कथन है कि ''यथार्थवाद तथा आदर्शवाद दोनों ही चित्रण शैली के दो स्थूल विभाग मात्र हैं। दोनों ही शैलियॉ लेखक के दृष्टिकोण पर अवलम्बित रहती हैं। कला की सौर्दय सत्ता की ओर दोनों का झुकाव रहता है। आदर्शवाद में विशेष या इष्ट के आग्रह द्वारा इष्ट ध्वनित होता है। यथार्थवाद में सामान्य व अभीष्ट के चित्रण द्वारा इष्ट की व्यजंना होती है।''

5. **डॉ० भगीरथ मिश्र (2015)** लिखते हैं कि ''प्रगतिवाद (यथर्थवाद) हमारी सामाजिक एवं नैतिक संकीर्णता को दूरकर नैतिक एवं सामाजिक चेतना

Rajshri

सार्थक मूल्यों की रक्षा का प्रयत्न दिखता है। लेखिका समसामायिक जीवन से जुड़ी है वे जीवन में उत्पन्न कठिनाओं को स्वीकार करती है।

मन्नू भण्डारी को समाज, व्यक्ति, परिवार, राजनीति, धर्म, शिक्षा इत्यादि क्षेत्रों में उत्पन्न समस्याओं आन्दोलन करने के लिए विवश किया। मन्नू भण्डारी ने परिवार की समस्याओं को दो स्तरों पर प्रस्तुत किया है। **'ए खाने आकाश नाई', 'छत बनाने वाले' तथा 'स्वामी'** उपन्यास में संयुक्त परिवार के विघटन को समस्या को बड़ी सर्तकता से साथ प्रस्तुत किया है। **'आपका बंटी', 'एक इंच की मुस्कान'** उपन्यास तथा **'बंद दराजों का साथ'** कहानी में दाम्पत्य जीवन में आये विघटन से उत्पन्न अकेलेपन की बड़ी ही सार्थकता के साथ उठाया है।

मन्नू भण्डारी ने अपनी कहानियों क्रमशः **'मैं हार गयी'** तथा **'एक प्लेट सैलाब'** में राजनीतिक स्वार्थपरता तथा राजनीतिक भ्रष्टाचार, परिवारवादी वर्चस्व तथा **'महाभोज'** उपन्यास में राजनीति के विकृत एवं विकराल रूप तथा मूल्यों के टूटन का चित्रण किया है।

मन्नू भण्डारी की कहानी **'रेत की दीवार'** में बेरोजगारी के अभिशाप तथा **'यही सच है'** कहानी में इन्टरव्यू में होने वाले खोखले आडम्बर को चित्रित किया है। इनकी कहानी **'दीवार बच्चे और बरसात'** में एक स्वतंत्र विचार रखने

Rajshri

वाली शिक्षित एवं आत्मनिर्भर स्त्री का चित्रण है। इनकी **'क्षय'** कहानी में ट्यूशन की एक ऐसी समस्या का चित्रण है जो वर्तमान समय के सच को दर्शाती है। हरिजन शिक्षा की समस्या को इन्होंने अपने कई उपन्यासों में प्रस्तुत किया है।

मन्नू भण्डारी स्त्री विमर्श की एक ऐसी रचनाकार है जो थे पुरुष की अनिवार्यता को भी अपनी रचनाओं में स्थान देती हैं। उनका विचार है स्त्री को एक सहारा, जीवन साथी, कुटुम्ब, बच्चे चाहिए। उनके साहित्य में विवाह के प्रति प्रतिरोध की चेतना का भी अंकन हुया है।

मन्नू भण्डारी ने नारी विमर्श को एक नये अर्थ में प्रस्तुत करते हुये नारी अस्मिता जसे मुद्दे को बड़ी मार्मिकता के साथ उठाया है।

मन्नू भण्डारी हिन्दी साहित्य की उन गिनी–चुनी कथाकारों में है जिन्होने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री के सम्पूर्ण जीवन का चित्रण बहुत ही सशक्त तरीके से किया है।

प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्यः–

इनके साहित्य का उद्देश्य का मुख्य केन्द्र बिन्दु स्त्री रही है। समाज में नारी के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण को उजागर करना लेखिका का महत्वपूर्ण

Rajshri

दृष्टिकोण रहा है। मन्नू भण्डारी एक सशक्त कथा साहित्यकार के रूप में हमारे सामने आयी हैं। उनका समग्र साहित्य ही समाज में घटित महत्वपूर्ण तथ्यों को उजागर करता है। इस प्रस्तावित शोध के उद्देश्य बिन्दुवार निम्नलिखित हैं :–

1. मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य के माध्यम से नारी में प्रतिरोध चेतना को नवीनतम विकास को परिलक्षित करना।

2. मन्नू भण्डारी के समूचे साहित्य में विभिन्न पात्रों के द्वारा स्त्री के सम्पूर्ण जीवन की विसंगतियों से अवगत कराना तथा उनको दूर करने के लिए आवश्यक कदम उठाया जाना।

3. मन्नू भण्डारी के विचारों के आधार पर नारी को उसके उत्थान के लिए प्रेरित किया जाना।

4. मन्नू भण्डारी की रचनाओं की समीक्षा द्वारा मन्नू भण्डारी के साहित्यिक योगदान का मूल्यांकन करना।

5. मन्नू भण्डारी के मौलिक चिन्तन के माध्यम से नारी में प्रतिरोध की चेतना को जागृत करना।

Rajshri

शोध विधि :–

मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य का अध्ययन, अनुशीलन व शोध करने की इस प्रक्रिया में मुख्य रूप से वर्णनात्मक, विवरणात्मक, आलोचनात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा। मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य से प्राप्त स्त्री चेतना का अध्ययन इस शोध विषय का आधार होगा।

अध्ययन की परिसीमायें :–

मन्नू भण्डारी पर इस शोध से आगे आने वाली अनुसंधानकर्ता उनके अलग–अलग साहित्य विधाओं को लेकर उसमें व्यक्त विचारों व चिन्तन पर पृथक–पृथक रूप से शोध कर सकेंगे।

उपसंहार–मन्नू भण्डारी का समूचा साहित्य समाज की समस्याओं से ओत–प्रोत है। समाज के वास्तविक निर्माण में नारी–नारी का होना अत्यन्त आवश्यक है। जहाँ पर स्त्री शोषण जैसी समस्या आती है, वहाँ वह नारीवादी रूप धारण कर लेती हैं। परम्पराओं व रूढ़िवादिता के खिलाफ खड़ी होकर परम्परा में ही नवीनता का विगुल बजाती है। इनकी स्त्री अन्दरूनी संस्कार, भावना, परिस्थिति व संवेदना को कभी बर्दाशत करती है, कभी उन्हें तोड़ फेकती हैं, कभी स्वयं को तोड़ती है। अपनी रचनाओं में उन्होंने स्वयं की जीवन कथा को ही प्रस्तुत किया है।

Rajshri

अध्याय विभाजन

शोध विषय का अनुसंधान सुचारू रूप से सम्पन्न करने हेतु नियोजित होना आवश्यक है। शोध कार्य की सुविधा की दृश्टि से मैंने अपने षोध विशय **"मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में प्रतिरोध की चेतना : एक अध्ययन"** को निम्नलिखित अध्याय में बांटा है: –

1. **प्रथम अध्याय –मन्नू भण्डारी : कथा साहित्य में प्रतिरोध चेतना दृष्टि**

   क. कथा साहित्य में स्त्री चेतना की विविध स्थितियों का चित्रण।

   ख. कथा साहित्य में नारी स्वरूप का वर्णन।

2. **द्वितीय अध्याय –मन्नू भण्डारी : व्यक्तित्व**

   क. जीवन परिचय

   ख. उनकी कार्यशैली

3. **तृतीय अध्याय –मन्नू भण्डारी का साहित्यिक योगदान**

   क. पारिवारिक संदर्भ में

   ख. सामाजिक संदर्भ में

   ग. राजनीतिक संदर्भ में

Rajshri

घ. नारी चेतना के संदर्भ में

4. **चतुर्थ अध्याय –**

उपसंहार

संदर्भ ग्रन्थ

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. मैं हार गई (1957)मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।
2. यही सच है (1957) मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. औरत एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (2006) ज्ञानेन्द्र रावत, विश्वभारती प्रकाशन दिल्ली।
4. हिन्दी कहानी (1968) इन्द्रनाथ मदान राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास (1976) डॉ0 नगेन्द्र, एन.पी.एच., नई दिल्ली।

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language — Hindi

Submission Information

Author Name	Rajshree Shukla
Title	"Mannu Bhandari Ke Katha Sahitya Mein Pratirodh Ki Chetna : Ek Adhyayan"
Paper/Submission ID	4113105
Submitted by	rjmauryauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-07-21 12:53:23
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity	**1%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

Rajshri

DrillBit

...it Similarity Report

1	1	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

...TION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	1	Publication

Rajshri